वर्ष 27 अंक 1 जनवरी-2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका



नमन मुरुग नायनार, भक्ति के भव्य सुमन।
समन कर पूजा पाये, शिव के महान चरण ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்



- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

आजीवन सदस्य ₹ 1000/- (20 वर्ष)

वर्ष 27, अंक 01 | मूल्य ₹ 3/- | जनवरी - 2025

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

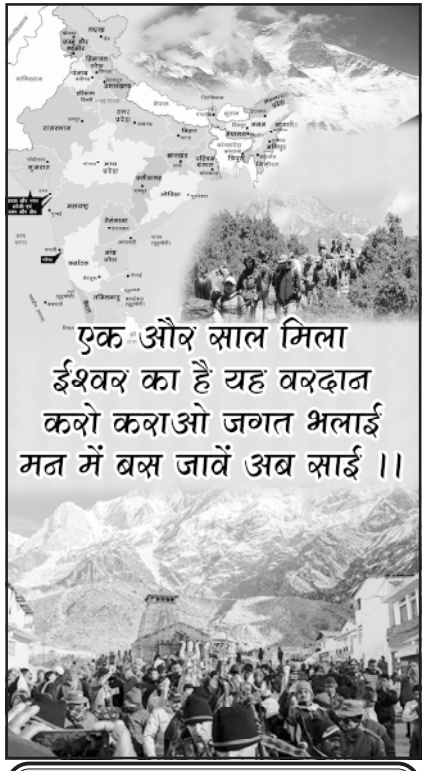
संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414



VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414
0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
मैं असफल क्यों हूँ ? 7
व्यवहार 8
त्रिनेत्रधारी भोलेशंकर त्रिपुरारी 10
ख़्वाहिश-ए-दिल 12
धर्म पथ 13
नया साल कुछ करें हम और आप 14
तीन सवाल 15
धरोहर बारसूर का बत्तीसा मन्दिर . 16
जीवन-पथ पर बढ़ते जाओ 17
गणतंत्र दिवस 18
इस देश में 20
सुप्त-सम्बन्ध 21
ग़ज़लें 22
माँ सावित्रीबाई फुले..... 23
नववर्ष का स्वागत 23
ये जंग तुझे ही लड़नी है । 24
हिन्दी 24
भोले की छवि 25
हालत फिर बेचारेवाली जैसी है ।। 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
नववर्ष का आगमन !!..... 30
मासूमियत से । 31
नमन 31
सर्दी आई 32
जीवन्त-यश 32
छब्बीस जनवरी 33
सिंगार बढ़ाओ 33
शब्द की गरिमा 34
नवगीत 34
जिंदगी उधारी से चलती नहीं 35
दर्द कौन बांटे 35
बुलबुले और बुलबुलें 36
अब कहाँ ? 36
पतंग की पुकार 37
जाल 37
खूबसूरत दिल 38
पूर्णिका 39
उसकी यादें 39
पाठकों के पत्र 40
नवांकुर 42
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 44
अनधिकार चेष्टा कदापि श्रेयस्करं . 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜனவரி-2025	19-01-2025	01-10-2024 to 30-11-2024	05-12-2024
ஏப்ரல்-2025	20-04-2025	01-01-2025 to 28-02-2025	05-03-2025
ஜூலை-2025	20-07-2025	01-04-2025 to 31-05-2025	05-06-2025
அக்டோபர்-2025	26-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பம் மற்றும் தேர்வு கட்டணம் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (www.shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.
★ D.D. மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

आज के जमाने में ही नहीं बल्कि मानव के आदि काल से आनेवाले कल तक मानव के जीवन में शिक्षा का अपना अलग महत्व है । मानव का जीवन उसके शिक्षा पर आधारित है । शिक्षा का सही लाभ उठानेवाला जीवन में अपने स्तर और शैली को उच्चतम बना लेता है । शिक्षा का महत्व शब्दों में प्रकट करनेवाला नहीं है । बच्चे अपने प्रारंभिक कक्षाओं में जो सीखते हैं उसे जिन्दगी भर नहीं भूलते हैं । शिक्षक के हर शब्द का प्रभाव हर बच्चे में जरूर पाया जाता है । शिक्षा पद्धति बच्चे को सही मार्ग में ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य जरूर करता है ।

हाल ही में भारत सरकार ने घोषणा की है कि पाँचवीं और आठवीं कक्षा के लिए परीक्षाएँ चलाई जायेंगी । परीक्षा में जो उत्तीर्ण होगा वह अगले वर्ग भेजा जायेगा । जो उत्तीर्ण नहीं हुआ दो महीने के बाद एक बार फिर से परीक्षा देकर उसमें उत्तीर्ण हो जाने पर अगले वर्ग तक पहुँच पायेगा । उसमें जो उत्तीर्ण नहीं होता है वह उसी वर्ग में एक साल और पढेगा । इस प्रकार करने से छात्र पूर्ण मन से पढने में लगेंगे । उनमें शिक्षा का सही असर पडेगा । बिना परिश्रम और लगन से दसवीं कक्षा तक पास होते जाने पर शिक्षा में रुचि न लेनेवाले छात्र पिछडे ठहर जाते हैं । केंद्र सरकार का यह कदम सिर्फ छात्रों में ही नहीं अभिभावकों के साथ अध्यापकों की भी जिम्मेदारी और बडा देगी । इसलिए यह कदम सराहनीय तथा अनुकरणीय भी है ।

शिक्षा के क्षेत्र में उचित मानदंड का होना जरूरी है । भावी संतति को बलवान बनाने में यह काम आयेगा । शिक्षा के साथ आचरण तथा सद्गुणों का भी सही स्थान देने से कल के नागरिक चरित्रवान बनेंगे । देश की समृद्धि तथा सुख इसी पर आधारित रहेगा ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!



अनमोल वचन

परिवार तथा देश

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – अपने परिवार तथा देश की प्रगति के लिए कुछ भी काम करूँगा ऐसा दृढ निश्चय करनेवाला व्यक्ति की महिमा अपार है ।

अथक प्रयास तथा परिपूर्ण बुद्धि इन दोनों के साथ लगातार काम करने से परिवार और देश दोनों की बढौती होगी ।

अपने परिवार और देश की प्रगति के लिए अथक प्रयास तथा कार्य करनेवाले व्यक्ति की मदद करने के लिए भगवान भी तैयार रहेंगे ।

अपने देश तथा परिवार के लिए पूर्ण मन और गति के साथ काम करनेवाले को उस काम को पूरा करने की क्षमता अपने आप मिल जायेगी ।

जो दोशहीन हो और जनता की भलाई के लिए काम करता हो उसे अपना रिश्तेदार मानकर जनता सदा साथ देगी ।

किसी का पुरुषत्व उसके परिवार तथा देश को सही रूप से चलाने की क्षमता रखने में है ।

युद्ध क्षेत्र में शत्रु का सामना करना निडर वीर से संभव है उसी प्रकार अपने परिवार और देश को बढानेवाला ही उसका भार भी सह सकता है ।

अपने घर और देश को बढाने की इच्छा रखनेवाला आलस होकर अपने ही गुणगान करते रहेंगे तो सब नष्ट हो जायेगा । समय की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है ।

अपने पर आधारित परिवार और देश के दुख को अपना मानकर उन्हें दूर करने के लिए प्रयास करनेवाला दुख का भार सहने के लिए जन्मा माना जायेगा ।

आनेवाला दुख को दृढता सहित सामना करनेवाले सुपुत्र नहीं होने पर वह दुख उस परिवार को नष्ट कर देगा ।

मैं असफल क्यों हूँ ?

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

मैं असफल क्यों हूँ ? पूछ लिया मैंने अपने आप
कारण जानना हर कार्य का फल उसे जानना
कर्तव्य है यहाँ हर किसी का जान लेना आप
करने के बाद कुछ भी उसके फल जरूर अपनाना ।

जितने सारे साथ रहते हैं सब के सब साथ न देते
जितने भी प्यार बरसाओ तुम्हें वे अपना नहीं मानते
आगे करते मधुर वचन सस्नेह पीछे अपना रूप दिखाते
आज जान लो अनेकानेक यहाँ रिश्ता अभिनय से निभाते ।

सबके सामने अच्छे बनने का नाटक जो किया करते
सबसे रिश्ता निभाने का नाटक कर वे जीत भी जाते
कभी असली मुँह न दिखाकर मुखौटे ये बहुत अपनाते
कभी भी असली प्यार या आदर वे कभी नहीं दे पाते ।

सच बोलता फिरता हूँ कभी झूठ का सहारा नहीं लेता
आज का काम आज ही कर समय का लाभ मैं उठाता
पीठ के पीछे किसी की बुराई करना पाप ठहरता घोर
पीछे नहीं आगे बता देता हूँ उनके दोष को हाँ मैं पूर ।

मान लो कोई मान नहीं देते आजकल अच्छाइयों को
मानकर चलते उन बातों को जो पहले आकर बोलते
कभी अपने आपको मत बदलो मन में भरो अब नूर
मन में सत्य को स्थान देकर हृदय को अब तुम सजाओ ।

किसी के लिए हारना जीना नहीं जीवन को खोना है
मन की बात मानकर आगे बढना ही यहाँ जीना है
मानकर चलो तुम मन की बात सत्य का मार्ग अपना
मार्ग खुलेगा महान सत्य का, मन खिलेगा शांति से नित ।।

व्यवहार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

वह सोमवार का दिन था । हफते का पहला दिन हमेशा सुखदायक नहीं होता है । ज्यादातर लोग उस दिन को सुखमय नहीं मानते । भारत भर के अनेक शहरों में इसे छोटे रविवार कहकर बुलाते हैं और उस दिन काम करने नहीं जाते हैं । रविवार के खतम होते ही मन अगले रविवार का इन्तजार करने लगता है । मानव का मन अपने इष्ट काम के अलावा अन्य कार्यों में जल्द ही मुँह मोड लेता है । हर दफ्तर में विभिन्न चरित्रवाले लोग रहा करते हैं । सारे के सारे एक जैसा नहीं होते । अगर सारे एक जैसे होते तो वे कभी उन्नति नहीं कर पाते । जहाँ विचारों में मतभेद है वहाँ प्रगति जरूर होती है । जहाँ लोग एक जुट होकर काम करते हैं वहाँ भी प्रगति स्थान पाती है ।

सोमवार के दिन सबसे पहले आ गयी अंबिका । नाम सुनकर लोग हमेशा उसके बारे में अच्छा ही सोचने लगते हैं । हरेक का नाम उनके चरित्र का यथार्थ रूप प्रस्तुत नहीं करता है । उस दफ्तर को साफ रखना और सबको चाय पिलाने का काम करनेवाली वह औरत अपने आपको उस संस्था का मालिकिन समझती थी । किसी का भी मुँह लगना उसे बहुत ही अच्छा लगता था । इसे हम स्त्री स्वभाव भी नहीं कह सकते । आज भी दुनिया में आदर्श और आदर से भरी लाखों करोडों स्त्रियाँ हैं । स्त्री का मान सम्मान करनेवाले करोडों नर भी हैं ।

बात जब इस औरत की आती है तब हमें इतना पता है कि आजकल के स्वार्थी नर का यह सही उदाहरण है । सबकी बुराई करने के साथ सबके सामने अपने आपको बहुत नेक दिखाने का काम यह हर रूप से करती है । लेकिन किसी एक की भी भलाई दिल से भी नहीं चाहती है । दफ्तर में जो कोई आ जाते यह अपनी हाजिरी देती है और दूसरों की बुराई करती है । तीसरे से चौथे के बारे में वह शिकायत करती है । उस दफ्तर में एक लडका था । जिसकी तीस साल की उम्र होगी । वह अपने काम से मतलब रखता था । सबकी मदद करनेवाले उस लडके को उस दफ्तर के लोग इतना भाव नहीं देते थे । उसके सामने कुछ नहीं बोलने पर भी पीठ के पीछे उसकी बुराई

करते थे । वह अपना काम करता था । अगर उससे कोई मदद माँगे तो दिल खोलकर किया करता था । दुनिया की यही रीति है कि जो अच्छा है उसके बारे में भले-बुरे कहने पर लोगों का पेट और मन भर जाता है ।

अंबिका की अमृतवाणी शुरू हो गयी - आज देखो वह काला कपडा पहनकर आया है । उसके विचार और व्यवहार दोनों काले रंग के हैं । आज तो और मुँह फुलाकर बैठेगा । उसकी वाणी से खिलते हुए गणेश बोला - उसे हँसना भी नहीं आता है । जीना भी नहीं आता है । उसे खुद के बल पर खडा होना भी नहीं आता है । नाम और काम दोनों में वह नाकामयाब है । दोनों की बात का मजा लेते हुए पप्पू ने कहा - जिन्दगी में इतना घमंडी व्यक्ति को मैंने और कहीं नहीं देखा है । कभी किसी की बात नहीं मानता है । कभी किसी के साथ नहीं जाता है । अपना काम अपने इच्छानुसार करता है और कभी किसी दूसरे की कदर तक नहीं करता है । क्या जिन्दगी है उसकी ? पप्पू की बातों से अंबिका और गणेश खुशी से पागल हो रहे थे ।

उनकी बातों को सुनते हुए जेमि दफ्तर के अन्दर घुसे । तीनों को बुलाकर कहा - आप तीनों को दूसरों में गलतियाँ निकालने के अलावा और कुछ आता भी है क्या ? सुबह सुबह दूसरों में कमी ढूँढना छोडकर हो सके तो किसी का सहारा बनें या किसी का दिल न दुखा करें । आपको पता है क्या ? उसके घर और परिवारजनों की स्थिति कैसी है ? वह दुखी है तो उसके अनेक कारण होंगे । उसे न जानने का मन है तो ठीक है । पर एक बात हमेशा याद रखना दूसरे के व्यवहार पर अपना विचार व्यक्त करने के पहले अपने व्यवहार पर विचार करना । फिर किसी के बारे में कुछ बोलना । आप भला तो जग भला । अगर आपका विचार सही है तो सबमें आप अच्छी बातें ढूँढेंगे नहीं तो ऐसी बातें ही करेंगे । तीनों का सिर शरम से झुक गया । जेमि अपने काम में लग गये ।

पक्षी बानो उड़ते रहो
सच्चे मन से तुम काम करते रहो ।



त्रिनेत्रधारी भोलेशंकर त्रिपुरारी

– डॉ. राकेश कुमार सिन्हा 'रवि',
गया, बिहार

इस दुनिया में देखने, परखने, विचारने और जानने का आधार आँख है जिसके बगैर जगत शून्य व्याप्त होता है । सामान्यतः इस धरती पर अधिकांश जीवों के दो आँखें हैं पर देवों के देव महादेव के त्रिनेत्र न सिर्फ अपने आप में अनूठा व अद्वितीय वरन अचरज से परिपूर्ण है । शंकर जी के मस्तक के मध्य में उर्ध्व रूप में विराजित तीसरी आँख का रहस्य धर्म तत्व से परिपूर्ण है जो जानने समझने योग्य है ।

ऐसे भी देवराज शिव को तीन अंक से अधिक से प्रेम है इसी रूप में त्रिशूल, त्रिपुण्ड, त्रिदण्ड और त्रिलोकों में इनकी यशःगान की महिमा को समझा जा सकता है । शिव शंकर के इन तीनों नेत्रों का क्रम दाहिना को भूत, बायाँ को भविष्य और ऊपर के आँख को वर्तमानकाल का बोधक माना गया है तो इसे इंगला, पिंगला और सुषुम्ना जैसे श्वसन चक्र के रूप में परिभाषित किया गया है ।

आज्ञा चक्र पर विराजमान शिवजी का तीसरा नेत्र, बुद्धि और विवेक का द्योतक है । पुराणों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि सदाशिव के तीनों आँख अर्थात् बायाँ, दाहिना और मस्तक पर विराजमान क्रम से सूर्य, चंद्र व अग्नि का प्रतीक है जिसे सत्, रज और तम् गुण से प्रभावित बताया गया है । शिव शंकर की दोनों आँखें भौतिक रूप से इंद्रियाँ हैं और तीसरी आँख दिव्य दृष्टि से संबंधित है । यह आँख ज्ञान, भक्ति और मोक्षकारक है । माया से परे यह तीसरी आँख ही सत्य और सत्य के बीच स्पष्ट रूप से विभेद करता है और यही उन्हें उत्तमोत्तम स्थान पर विराजित करता है । कई अर्थों में त्रिभुवन अर्थात् मर्त्य, पाताल व स्वर्ग लोक की चर्चा है और सदाशिव का तीसरा नेत्र स्वर्गदायक है, मोक्षदायक है । शिवजी का यह तीसरा आँख, जो अग्नि का

प्रतीक है भस्मकारक और रौशनीदायक है और इसके भी तीन विभेद हैं – गोहपत्य, आवहणीय और दक्षिणाग्नि । यह सत्य है कि अग्नि अगर शांत है तो रौशनीदायक है और उग्र है तो भस्मकारक । आशय स्पष्ट है कि शिवजी की कृपा है तो सब कुछ संभव है और अगर अकृपा हुई तो कोई भी काम बनना संभव नहीं ।

उल्लेखनीय है कि शंकर के पाँव में सभी नवग्रह का स्थान है और यही तीसरा नेत्र उनके कुप्रभाव का शमन दमन कर पूजनकर्ता के साथ उसके पूरे परिवार का भाग्यवर्द्धन करता है ।

शिव शंकर ज्ञान के प्रतीक हैं और यही तीसरा नेत्र उन्हें दिव्य ज्ञान देता है इसी ज्ञान के फलाफल से इस चराचर में कोई भी जीव अपने कार्य में सफल होकर जीवन को मंगलमय बनता है । तीन तरह के ताप अर्थात् दु:ख में दैहिक को आधिदैहिक, दैविक को आधिदैविक और मानसिक को आध्यात्मिक कहा गया है और शिव जी का तीसरा नेत्र इसी मानसिक रूप का उदाहरण है जो उन्हें आध्यात्म जगत् का शिखर पुरुष बनाता है तभी तो वह देवों के मध्य महादेव हैं ।

धर्म शास्त्रों में शिवजी का तीसरा नेत्र यज्ञाग्नि का प्रतीक बताया गया है और इसी की अंत:करण की प्रेरणा से उन्होंने कामदेव को भस्म किया था । विवरण है शिव पार्वती के मंगल उत्सव का महादिवस अर्थात् शिवरात्रि को शंकर जी का तीसरा नेत्र स्वत: खुल जाता है और अपने इस दिव्य दिव्य चक्षु से त्रिलोचन सदाशिव भक्तों के भाव, गुण व आस्था की परख कर उन्हें मनचाहा वर प्रदान करते हैं जिससे वह इस भू लोक में परम पद प्राप्त कर लेता है ।

आदिवासी नहीं हम तो आधुनिक जगत के
निवासी है सुविधा बढ़ती रहें साथ-साथ सुविचार
भी यहाँ सदा भरते रहे ।



ख़्वाहिश-ए-दिल

– श्री. प्रिया देवांगन 'प्रियू',
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

शर्मा जी ! हमें और हमारे बेटे राहुल को आपकी बेटी नेहा पहली नजर में ही पसंद आ गई । इस बारे में आप लोगों का क्या विचार है ? हम जल्द ही जानना चाहते हैं ।

जी... जी... तिवारी जी; ये तो बहुत ही शुभ समाचार है । शादी पक्की हो इससे पहले मैं आप लोगों के समक्ष अपनी कुछ बातें रखना चाहता हूँ । अरे... ! क्या बात है शर्मा जी; आप निश्चिंत रहिए । हम दहेज-वहेज के पक्ष में बिल्कुल नहीं हैं आप अपना दिल ठंडा रखिए; इस मामले में । तिवारी जी हँसते हुए बोले ।

दरअसल, बात यह है कि हमारी बेटी नेहा को कथक नृत्य बहुत पसंद है । नेहा हर प्रतियोगिता में अपनी सहभागिता प्रदान करती है । नेशनल-इंटरनेशनल तक के कंपीटिशन में फर्स्ट आई है । दूर-दूर देश-विदेशों में इसके नृत्य की प्रशंसा होती रहती है । मेरी ख़्वाहिश-ए-दिल है कि मेरी बेटी शादी के बाद भी अपना सपना पूरा करें और हमारा नाम यूँ ही रोशन करती रहे ।

मि. और मिसेज तिवारी जी एक-दूसरे को देख खुसुर-फुसुर करने लगे । नेहा के हृदय में चिंता की काली घटाएँ उमड़ रही थीं; चेहरे में फीकापन दिखाई दे रहा था क्योंकि रिश्ता बहुत अच्छा था; लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है सपनों को उड़ान देना !

थोड़ी देर बाद मिसेज तिवारी सोफा से उठ हाथ आगे कर बोली – देखिए भाई साहब, आजकल की लड़कियाँ घर में कैद नहीं रहना चाहती हैं, इन लड़कियों से हम भलीभांति परिचित हैं । लेकिन हमारी नेहा तो... बीच में ही टोकती हुई मिसेज शर्मा बोली । मिसेज शर्मा... ! मेरी बातें अभी पूर्ण नहीं हुईं । आप लोगों को क्या लगा ? हम आपकी बातें सुन रिश्ते से इनकार कर देंगे; सभी की नज़रें मिसेज तिवारी पर टिकी हुई थीं । इतना सुनने के बाद

नेहा की धड़कनें और बढ़ने लगीं ।

नहीं–नहीं... भाई साहब ! हमारी सोच इतनी छोटी नहीं है कि हम नेहा के सपनों को कैद कर रसोई तक ही सीमित रखें । हमारी बेटी नहीं है तो क्या हम आपके हृदय की बातें नहीं समझ पाएँगे ? मैं भी तो किसी की बेटी हूँ न ? आप अपनी सारी चिंताओं को डस्टबिन में फेंक आइए; और हाँ अब से नेहा हमारी हुई । ऐसा बोलकर मिसेज तिवारी ने नेहा को गले से लगा लिया । वाह ! क्या बात है आज मैं धन्य हुआ, आप लोगों से रिश्ता जोड़ कर । तिवारी जी, आप लोगों ने हम सब का मान रखा । शर्मा जी के साथ–साथ उनके घर के सभी लोगों के होठों पर हँसी और आँखों में खुशियों के मोती चमकने लगे ।



धर्म पथ

– श्री. शारदाम्बाल,
चेन्नै, तमिलनाडु

हम अँग्रेज़ीयों के गुलाम बनना नहीं चाहते मगर बन गये
हमारे नव वर्ष चैत्र मास में ही आरंभ होता मगर भूल गये
हमें जीवन बिताने के वेतन इसी वर्ष में मिलता है विवश हुए
हम मनके आदेश पर चलने लग गये मगर हृदय को भूल गये
हम धर्म के विरुद्ध जाना नहीं चाहते मगर चलने लग गये
हम कृष्ण के गीता के रास्ते में जाना चाहते मगर स्वार्थ होके अधर्म करने लग गये
हमें अभी सावधान रहना है दुष्कर्म करने से मगर डरपोक बन गये
हमें धर्म की रास्ते पर ले जाने केलिए गुरु को कृष्ण भेजेगा
हमें गुरुजी को भगवान मानके धर्म पथ पर जाना है

प्यार को जीवन का आधार बना यार
गुस्सा करके क्या हासिल करोगे गुस्सा छोड़ो यार ।

नया साल कुछ करें हम और आप

2025 एक नया साल अब हमारे सामने है । कुछ ऐसे नियम हम बनाएँगे उसे अपनाएँगे और साल का पूरा लाभ हम अब उठाएँगे ।

हर रात को सोने से पहले हम अपने आप के लिए 5 मिनट का समय अवश्य देंगे । पूरे दिन में हमने जो कुछ भी किया उन सब कार्यों का अवलोकन करके दिन का लाभ कैसे उठाया गया उसका हम आत्मावलोकन जरूर करेंगे ।

सोने से पूर्व अपने इष्ट देवता को धन्यवाद अर्पित करते हुए निद्रा देवी के हाथों में अपने आप को पूरे रूप से सौंपेंगे ।

प्रतिदिन सुबह जब हमारी आँखें खुलती है तब हम देवता की याद करते हुए उनको प्रणाम करते हुए उस दिन को एक सफल दिन मानेंगे और अपने आप को एक सफलतम व्यक्ति मानकर चारपाई से उठेंगे ।

कल तक भले ही आप कसरत नहीं किए होंगे चलेगा लेकिन आज से साल भर अवश्य कसरत करने का प्रयास जरूर करेंगे और अपने आप को स्वस्थ रखने में सहायता करेंगे ।

जो कुछ भी मिले उसका सेवन नहीं करेंगे । अब से तंदुरुस्त भोजन अपनाने का प्रयास करेंगे और बच्चों में भी यह आदत डालने का प्रयास जरुर करेंगे ।

अच्छी पुस्तक पढ़ने की आदत डालने के साथ अच्छे संगीत का रस अपने का भी प्रयास जरुर करेंगे और करायेगे ।

अपने साथ-साथ हमारे परिवार, समाज तथा देश को भी बढ़ने का उत्तम कार्य हम कम से कम अब से शुरू करेंगे ।

अपने ही नहीं आसपास के बच्चों में देशभक्ति तथा देव भक्ति बढ़ाने, जगाने तथा उसे कायम रखने का प्रयास अवश्य करेंगे ।

साल भर जहाँ कहीं हमें अवसर प्राप्त हो वहाँ पेड़ पौधे लगाने का भी महत्वपूर्ण काम हम जरूर करेंगे ।

भारतीय एकता विश्व भर में भारतीय जनता को महान दिखने में काम आएगा इसे बढ़ाने का दायित्व भी हम जरूर अपनाएँगे ।

दुनिया में हम सिर्फ जीने के लिए नहीं बाकियों को जीने देने के लिए भी आए हैं । सद्गुण सारे अपना आएँगे और हम अपने इस जन्म को सदा सफल बनाएँगे ।

तीन सवाल

– डॉ. संदीप कुमार शर्मा,
दिल्ली

''आप एडवोकेट है । वकालत करतीं हैं । मुझे लगता है कि तीन मुद्दों पर हमें विशेष रूप से चर्चा कर लेनी चाहिए ।'' उमेश ने रागिनी से कहा ।

''जी, बताइए ।''

''आप विवाह के इस प्रस्ताव से सहमत हैं । किसी दबाव में आकर तो तैयार नहीं हैं ?''

''नहीं । जैसा घरवालों का फैसला होगा मुझे मंजूर है ।''

''आप अधूरे मन से ये कह रहीं हैं ।''

रागिनी मौन रही ।

''ठीक है । शादी के बाद अपना सरनेम बदलेंगी ?''

''वो तो हर लड़की को बदलना ही होता है ।''

''लेकिन यहाँ अंतरवर्णीय विवाह का प्रस्ताव है ।''

रागिनी ने कोई जवाब नहीं दिया ।

''आपका विवाह उच्च वर्ण में होगा । ऐसी स्थिति में आप अपना सरनेम बदलना पसंद करेंगी या नहीं ?''

रागिनी ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया – ''इस विषय में मैंने कुछ सोचा नहीं है ।''

''आपसे अंतिम प्रश्न है कि हमारे बच्चों की शादियाँ कहाँ होंगी ? अभी तो आप शादी के लिए तैयार हो जायेंगी लेकिन भविष्य में आपके भाई–बहनों का दबाव बच्चों की शादी को लेकर पड़ सकता है । क्या सोचती है आप ?''

कमरे में सन्नाटा पसर गया ।

आज पच्चीस साल बाद जब भी रागिनी इन सवालों के बारे में सोचती है तो उसे पछतावा होता है ।

तेरे मेरे उसके इसके साथ सबका सदा
विकास होते रहे वही जिंदगी है
वही सुखमय है ।



धरोहर
बारसूर का बत्तीसा मन्दिर

– श्री. त्रिभुवन लाल साहू,
जाँजगीर, छत्तीसगढ़

यह मंदिर एक ऐतिहासिक और पवित्र भगवान शिव का जुड़वा मन्दिर हैं, जिसके दो गर्भगृह में दो शिवलिंग स्थापित है, जो छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में स्थित है । यह मंदिर 32 खंभों पर टिका है, इसकी इसी विशेषता के कारण इसे बत्तीसा मंदिर कहा जाता है ।

मंदिर का निर्माण छिन्दक नागवंशीय नरेश सोमेश्वरदेव ने अपनी रानी गंगमहादेवी के लिए करवाया था । जिनमें राजा और रानी शिव की अलग-अलग आराधना करते थे ।

मंदिर का पुनर्निर्माण वर्ष 2003 में पुरातत्व विभाग द्वारा कराया गया था । यहाँ एक मान्यता है कि नंदी के कान में प्रार्थना करने से मनौती पूर्ण होती है ।

इसके अलावा, यहाँ एक किंवदन्ति भी है, जो राजा बलि और भगवान विष्णु के वामन अवतार से जुड़ी हुई है । कथा के अनुसार, भगवान विष्णु ने राजा बलि से तीन पग जमीन मांगी थी और फिर उसे पाताल में पहुँचा दिया था । इसके बाद, बलि पुत्र बाणासूर ने दंडकारण्य वनांचल में बाणासुरा नाम नई राजधानी बसाई थी । श्रीकृष्ण के पुत्र अनिरुद्ध के बाणासुरा प्रवेश के बाद से यहाँ का पतन शुरू हुआ था । बत्तीसा मंदिर एक ऐतिहासिक और पवित्र स्थल है, जो छत्तीसगढ़ की संस्कृति और इतिहास को दर्शाता है ।

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी...
शबरी के इस महान लक्ष्य में
आपकी भागीदारी सादर आमंत्रित है ।

जीवन-पथ पर बढ़ते जाओ



– डॉ. त्रिलोकी सिंह,
प्रयागराज, उ.प्र.

इस जीवन में बाधाओं से, कभी नहीं घबराओ ।
अवरोधों को चीर-फाड़कर, आगे बढ़ते जाओ ।।

मनुज कर्मरत हो करके ही,
सदा सफल हो पाया ।
जो कर्तव्यों से चूका वह,
जीवन भर पछताया ।।

दृढ़ संकल्प, सतत् श्रम करके, बिगड़े काम बनाओ ।
अवरोधों को चीर-फाड़कर, आगे बढ़ते जाओ ।। 1 ।।

अगर मिले असफलता भी तो,
हार कभी मत मानो ।
'सफल हुए बिन नहीं रुकेंगे',
मन में यह प्रण ठानो ।।

मन में जो सोचा है, उसको, पूरा कर दिखलाओ ।
अवरोधों को चीर-फाड़कर, आगे बढ़ते जाओ ।। 2 ।।

हार मानकर बैठ गया जो,
स्वर्णिम समय गँवाया ।
सारा जीवन गुजर गया, पर,
हाथ न कुछ भी आया ।।

फिर कदापि मत बनो आलसी, कर्म करो सुख पाओ ।
अवरोधों को चीर-फाड़कर, आगे बढ़ते जाओ ।। 3 ।।

भाग्य-भरोसे अगर रहे तो,
कभी न कुछ पाओगे ।
अगर निराशा ने घेरा तो,
किधर, कहाँ जाओगे ?

तो फिर बनो कर्मयोगी तुम, जग में नाम कमाओ ।
अवरोधों को चीर-फाड़कर, आगे बढ़ते जाओ ।। 4 ।।

ध्यान रहे यह, इस जीवन में,
आशा-डोर न टूटे ।
स्वप्नलोक में भी साहस का,
सम्बल कभी न छूटे ।।

लक्ष्य प्राप्तकर, नाम कमाकर, चहुँदिशि यश फैलाओ ।
अवरोधों को चीर-फाड़कर, आगे बढ़ते जाओ ।। 5 ।।

गणतंत्र दिवस

– डॉ. मृदुल शर्मा,
लखनऊ, उ.प्र.



– 1 –

हमारी जान से बढ़कर हमें प्यारा तिरंगा है ।
न समता कर सके कोई, मृदुल न्यारा तिरंगा है ।
हमारे पूर्वजों का गर्व–गौरव है बसा इसमें,
इसी से तो हमारी आँख का तारा तिरंगा है ।।

– 2 –

सारे मिल कर गीत राष्ट्र के सप्तम स्वर में गायेंगे ।
सारे भारतवासी इसकी उन्नति में लग जायेंगे ।
रक्त पसीने से हम अपने इसका कण कण सींचेंगे ।
भारत को दुनिया का सबसे सुंदर देश बनायेंगे ।।



– 3 –

चलेगी सांस जब तक हम इसी के गीत गायेंगे ।
इसे हर हाल में दुनिया में सर्वोत्तम बनायेंगे ।
करेंगे काम भारत की तरक्की के लिए मिलकर,
जरूरत आ पड़ी तो जान भी इस पर लुटायेंगे ।।



– 4 –

ये हमारा वतन, ये तुम्हारा वतन ।
खूबसूरत बहुत है हमारा चमन ।
ये तरक्की करे, शान इसकी बढ़े,
आइये हम करें बन्धु ऐसा जतन ।।

– 5 –

मातृभूमि की रक्षा में जो हो जाते बलिदान ।
युगों युगों तक देशवासियों से पाते सम्मान ।
प्रेरित करती उनकी गाथा सदा युवाओं को,
और शौर्य का उनके करता है इतिहास बखान ।।

– 6 –

त्याग, योग, बंधुत्व, अहिंसा से इसकी पहचान है ।
मानवता के पोषण में इसका अनुपम अवदान है ।
सब धर्मों का सम्यक आदर, सब जीवों पर दया–मया
इसीलिए तो सारे जग में, भारत पाता मान है ।।

– 7 –



रहे न कोई भूखा नंगा ।
कहीं न हो अब कोई दंगा ।
खुशहाली छाये भारत में,
सबसे ऊँचा रहे तिरंगा ।।

– 8 –

कोटि कोटि लोगों का सपना ।
चाहे जितना भी हो तपना ।
विश्व पटल पर, सब देशों में,
सर्वश्रेष्ठ हो भारत अपना ।।



– 9 –

खुद्दारी का ध्यान रहे ।
मृदुल अडिग ईमान रहे ।
दुनिया में तुम कहीं रहो,
दिल में हिन्दुस्तान रहे ।।

– 10 –



जिनको अपनी आन बान परिपाटी प्यारी है ।
जीवन से बढ़ काश्मीर की घाटी प्यारी है ।
जिनके प्राण रमें हैं भारत भू के कण कण में,
उन्हें नमन है जिन्हें देश की माटी प्यारी है ।।

– 11 –

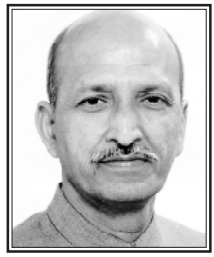
निजी परिवार से बढ़ कर वतन पर ध्यान देते हैं ।
अनूठा शौर्य दिखला कौम को पहचान देते हैं ।
हमेशा के लिए वे वीर हो जाते अमर जग में,
वतन की शान की खातिर मृदुल जो जान देते हैं ।।

– 12 –

इस मिट्टी ने पाला-पोसा, यह मिट्टी हमको चंदन है ।
इसका कण-कण ममतामय है, जिसकी द्युति होती मंद न है ।
यह मातृभूमि है अति पावन, यह जाति, धर्म से ऊपर है,
इससे प्राणों का रिश्ता है, इस माँ का शत शत वंदन है ।।

इस देश में

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.



जिस दौर में हिन्द को गुलाम लिखा गया था,
उस दौर का इतिहास वामियों ने लिखा था ।
मन्दिरों को तोडकर मस्जिदों की तामीर की,
हिन्द में कहाँ कब इस्लाम का डंका बजा था ?

यह देश है भारत, जहाँ हिन्दुत्व पला है,
सदियों से मानवता धर्म फूला फला है ।
रज रज में यहाँ की आस्था का सृजन,
केसरिया का मान इसी धरा से चला है ।

गुनहगार थे मुल्क के, इतिहास बदल गये,
महाराणा की जीत को, जो हार बदल गये ।
भारत के गौरव को जो मुगलों का बताकर,
राष्ट्र के सम्मान को, अपमान में बदल गये ।

पढ़ना कभी इतिहास के पन्नों को पलटकर,
वेदों पुराणों उपनिषद स्मृतियों को पलटकर ।
सन्तों व ऋषियों ने ही दिशा राष्ट्र को दिखाई,
लुटेरों की किताब आसमानी देखना पलटकर ।

राम को नकारते जो राम के देश में,
घूमते फिर रहे यहाँ कंस के भेष में ।
रामनामी वस्त्रों पर सवाल उठानेवाले,
नासुर बन रह रहे भारतीय परिवेश में ।

आते न थे नजर जो हासिये पर देश में,
कुछ पल गये परजीवी, विगत में देश में ।
समाजवाद का चेहरा, गरीबों की दुहाई,
बुद्धिजीवियों का साम्यवाद, इस देश में ।



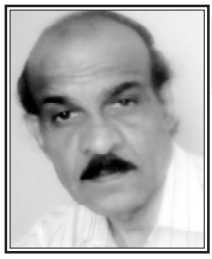
सुप्त-सम्बन्ध

– डा. ममता जैन,
पुणे, महाराष्ट्र

सम्बन्ध यूँ ही खामोश नहीं होते
धरातल पर दरार यूँ ही नहीं आती
प्राणों से गुंथी श्वास यूँ ही नहीं डूबती
कोई कारण होता ही है
सलवटें कितना भी दूर करो निशान रहता ही है
दरार कितना भी भरो
घाव रहता ही है
शान्त कितना भी रहो
दबाव रहता ही है
भीतर–भीतर ज्वालामुखी दहकता ही है
छिनी–छिनी मिटती हुई रोशनी
उदास बोली में बहुत कुछ कहती है

अर्थहीन होती अर्थवान परिभाषाएँ घुट–घुट कर तड़पती हैं
अपनी ही मस्ती में दूसरों का आकाश नोंचते दर्पण को तोड़–तोड़
टुकड़े–टुकड़े में बिम्ब निहार–निहार प्रफुल्लित होते
जलती हुई आकांक्षाओं पर स्वार्थ सेंकते सम्बन्धों की कहानी सपाट चलती है
चलती रही है बिना किसी रहस्य–रोमांच और त्रासदी के ।

मौका जब कभी मिले मदद सबका तुम करते रहो
मन में विशालता भरोगे तो
जीवन अर्थमय बनेगा ।



ग़ज़लें

– श्री. नवीन माथुर पंचोली,
अमझेरा, धार, म.प्र.

– 1 –

यूँ सलीक़ा लिए पैगाम दिया जाता है ।
नाम जो रोज़ सुबह शाम लिया जाता है ।
काम वह क़ाबिले तारीफ़ हुआ करता है,
जो सही वक़्त पर अंजाम दिया जाता है ।
चाँद ही वक़्त–बेवक़्त निकलता है मग़र,
बेवज़ह रात को बदनाम किया जाता है ।
जी रहे हैं जताकर लोग सब हस्ती अपनी,
इक भला शख़्श क्यों गुमनाम जिया जाता है ।
आप भर जायेंगे वो ज़ख़्म सारे चोटों के,
हाल ही क्यों इन्हें मुद्दाम सिया जाता है ।

– 2 –

हो गई कौन सी गल्तियाँ ।
लग गई आप पर सख़्तियाँ ।
कुछ हवाएँ चली और फिर,
सब कहाँ खो गई कश्तियाँ ।
रास्ता जब हुआ घूमकर,
कट गई राह से बस्तियाँ ।
इक ज़रा सी हुई भूल क्या,
लोग कसने लगे फब्तियाँ ।
आप–अपने कभी भूलकर,
रास आई नहीं मस्तियाँ ।

– 3 –

रोज़ से कुछ आज़ थोड़ा है अलग ।
रात का अंदाज़ थोड़ा है अलग ।
है सफ़ेदी आसमाँ पर दूध सी,
चाँद का एजाज़ थोड़ा है अलग ।
है शरद की रात इतनी ख़ुशनुमा,
जश्न का आगाज़ थोड़ा है अलग ।
कौन, कितना देखकर समझा करे,
आज इसमें राज़ थोड़ा है अलग ।
इस ज़मीं के साथ चलता–घूमता,
एक ये हमराज़ थोड़ा है अलग ।
लाख होंगे ख़ूबसूरत और पर,
आज इसपर नाज़ थोड़ा है अलग ।

– 4 –

कभी जब बात नीयत की रहेगी ।
ज़रूरत आदमीयत की रहेगी ।
रहेगा भाईचारा जब घरों में,
नहीं मुश्क़िल वसीयत की रहेगी ।
हमेशा जीत लेगी दिल सभी का,
शराफ़त जो तबीयत की रहेगी ।
निभाई जाएगी अक़्सर वही तो,
रिवायत जो जमीयत की रहेगी ।

– 5 –

तन्हाइयों को दर्द से फ़ुरसत नहीं मिली ।
शहनाइयों को सोज की क़ीमत नहीं मिली ।
सच की लड़ाई जब चली उन पैतरों के साथ,
अंज़ाम को जज़्बात से हिम्मत नहीं मिली ।
उसका सभी के साथ था अच्छा गुज़र–बसर,
लेक़िन उसे इस बात की इज्जत नहीं मिली ।
कहता रहा है ताज वो इक बात आज तक,
सबको यहाँ मुमताज़ सी चाहत नहीं मिली ।
कैसे करेगा पास वो फाईल यूँ आपकी,
अफ़सर जिसे उस काम की रिश्वत नहीं मिली ।
बारात में शामिल हुए जितने सगे यहाँ,
नाराज़ हैं वो सब जिन्हें ख़िदमत नहीं मिली ।
कसरत नहीं, योगा नहीं, डर खान–पान का,
पैसा कमाया लाख पर सेहत नहीं मिली ।
इतना इसे, उतना उसे, जितना लिखा मिला,
सबको जहाँ में एक सी क़िस्मत नहीं मिली ।



माँ सावित्रीबाई फुले

– श्री. भूपसिंह 'भारती',
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

जन जन में शिक्षा फैलाई ।
माँ फुले सावित्री बाई ।।

अनपढ़ता अंधकार मिटाने,
फुले शिक्षा की जोत जलाई ।

सदियों से गुलाम नारी को,
आजादी की राह दिखाई ।

पढो–लिखो अब मेरी बहनों,
शिक्षा में ही छिपी भलाई ।

लाचार अबला नारी की,
माँ फुले ने करी सहाई ।

सहकर खूब पीर फुले ने,
शिक्षा की ये अलख जगाई ।

बनी प्रथम महिला शिक्षिका,
देश की फुले सावित्रीबाई ।

ज्योति क्रांति को नमन–नमन,
जो असली आजादी लाई ।

नववर्ष का स्वागत

– श्री. भूपसिंह 'भारती',
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

स्वागत स्वागत करते हैं हम ।
नववर्ष का स्वागत करते हैं हम ।।

आए हमारे आँगन में खुशियाँ,
प्रेम ही प्रेम हो दिलों के दरमियाँ,
इनायत खुदा की रहे हरदम ।
नववर्ष का स्वागत करते हैं हम ।।

बेटी बचाएँ, बेटी पढाएँ,
मौका समान देकर आगे बढ़ाएँ,
नव वर्ष में हो, सर्वमंगलम ।
नववर्ष का स्वागत करते हैं हम ।।

घर आँगन में एक पेड़ लगाएँ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ,
नववर्ष में ना हो दुखी ये जनम ।
नववर्ष का स्वागत, करते हैं हम ।।

सबको अपने गले लगाएँ,
जाति धर्म का भेद मिटाएँ,
सपनों–सा सुंदर नववर्ष हो सनम ।
नववर्ष का स्वागत करते हैं हम ।।

'भारती' शिक्षा दीप जलाएँ,
अज्ञान अंधेरा दूर भगाएँ,
भविष्य अपना उज्ज्वल करें हम ।
नववर्ष का स्वागत करते हैं हम ।।



ये जंग तुझे ही लड़नी है ।

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

ये भूमि युद्ध की तेरी है,
तू इसका सेनानायक है ।
तू है रण कौशल में माहिर
तू विजय वरण के लायक है

तब असमंजस में क्यों बैठा
ये जंग तुझे ही लड़नी है ।

क्यों सोच रहा फल क्या होगा
तुझको कर्तव्य निभाना है ।
है यही हाथ में बस तेरे,
तुझको लड़ते ही जाना है ।

क्यों अर्जुन सम, है दुविधा में,
ये जंग तुझे ही लड़नी है ।

अपना ना कोई भी जग में,
और, ना ही कोई पराया है ।
संबन्ध यहाँ हैं सब झूठे,
ये सब मिथ्या है, माया है ।

तब आगे बढ़ तलवार उठा,
ये जंग तुझे ही लड़नी है ।



हिन्दी

– श्री. राही राज़,
बंगलूरू, कर्नाटका

हम हिन्द देश के वासी हैं,
यहाँ मथुरा और काशी है,
यह गंगा जमुना की पावन धरती है,
जो हिमालय से निकलती है ।।
जिस मान मर्यादा में हम रहते हैं,
वह भाषा हमारी हिन्दी है,
जिस सभ्यता संस्कृति में हम रहते हैं,
वह भाषा हमारी हिन्दी है ।।
जिस प्रकृति की हरियाली में हम रहते हैं,
वह भाषा हमारी हिन्दी है,
जिस प्रकृति की गोद में हम खेलते हैं
वह भाषा हमारी हिन्दी है ।।
यह हिन्दुस्तान हमारा है,
हिन्दी हमारी जान से प्यारा है,
हिन्दी हमारी जननी है,
हिन्दी हमारे माथे की बिंदी है ।।
यहाँ घर का बच्चा-बच्चा हिन्दी बोलता है,
यहाँ हर घर में हिन्दी का नारा गूँजता है,
हम जिस सूत्र में बंधते हैं,
वह भाषा हमारी हिन्दी है ।।
हम हिन्द देश के वासी हैं,
यहाँ मथुरा और काशी है,
यह गंगा जमुना की पावन धरती है,
जो हिमालय से निकलती है ।।



भोले की छवि

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम', इन्दौर, म.प्र.

भोले के दर्शन पाकर,
मन की कली खिल गई,
भोले-भोले कहते हैं,
प्रेम गली मिल गई ।
भोले के दर्शन...
नील गगन के तले,
जो बदली थी गुजर गई,
भोले की छवि देख,
प्रेम में पिघल गई ।
भोले के दर्शन...
किरणें थी चमक रहीं,
ओस से दमक रहीं,
भोले के अंतर में,
आग-सी दहक रहीं ।
भोले के दर्शन...
अलसाया प्रेम था,
धनिए-सा महक रहा,
भोले की भक्ति में,
दिल मेरा धड़क रहा ।
भोले के दर्शन...
आओ जन सारे मिल,
भोले को साथ लें,
सुख-दुख मिलें जो भी,
मिलकर सारे बांट लें ।
भोले के दर्शन...



हालत फिर बेचारेवाली जैसी है...।।

– श्री. विजय कनौजिया, जनपद, उ.प्र.

आज वही पीड़ा फिर पहले जैसी है
तन्हाई में उलझन पहले जैसी है
करवट में कटती रातें अब भारी हैं
हालत फिर बेचारेवाली जैसी है...।।

हर आहट उम्मीदों वाली लगती है
पायल की झंकार सुहानी लगती है
चौखट पर तकती आँखें लालायित हैं
बातें फिर जज़्बातोंवाली जैसी है..।।

सुख-दुःख का साथी फिर कोई अपना है
मन को बहलाता फिर कोई सपना है
मगन मयूरा बन कर मन फिर नाच रहा
प्रेम में पागलवाली हालत जैसी है...।।

रूप आज फिर निखरा-निखरा लगता है
देख आईना खुद शर्माने लगता है
बहकी-बहकी बातें अक्सर होती हैं
रोग दीवानेवाली अब तो जैसी है...।।

पल-पल में अब हंसना और फिर रोना है
कुछ पाना है और फिर कुछ से खोना है
जीत-हार और हार-जीत ही जीवन है
अपनी हालत इसी कहावत जैसी है...।।
अपनी हालत इसी कहावत जैसी है...।।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் www.shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகம் மற்றும் தேர்வுக் கட்டண விபரம் :

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

தேர்வுக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

தேர்வு கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.



महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

मुरुग नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

काम हो छोटा या बडा फल तो महान मिलता
काम करो ऐसा तुम जिससे मन सुख भरता
कभी कभी महान पद पाने काम महान होता
कभी कभी तृण भी महान काम का हो जाता
कमनीय काम से महान रास्ता वह खुल जाता
कहानी मुरुग नायनार की कुछ ऐसी है
भक्ति की शक्ति की वह बनी परिचारिका है
भक्त को अपनाये भगवान शिव कृपालू है ।



चोल राज्य के तिरुप्पुगलूर गाँव में जन्म लिए
जन्म मुरुग ये ब्राह्मण के परिवार में ले पाये
बचपन से भक्ति में मन इनका रमता रह गया
भक्त बन शिव का करने लगे थे भक्त शिवप्रिय
हर रोज तडके उठ जाते हाथों हाथ ये नहा लेते
शिव को सदा सर्वदा अपने मन में स्था देते
शिव महान को पाने की इच्छा रखते थे
शिव नाम का भजन सदा करते रहते थे ।

सुबह अतिशीघ्र जग जाते थे शिव के प्रिय
नहा धोकर भगवान का नाम लेते रहते
उद्यान में जाकर तरह तरह के फूल चुनते
फूलों से भगवान को अतिसुन्दर माला बनाते
फूलों में भी ये भगवान के प्रति प्यार भर देते
चुन चुनकर सुंदर माला ये बनाकर ले जाते
शिवजी पर च–सजयाने लायक अतिसुंदर माला देते
शिवजी पर माला देखकर स्वयं खुश हो जाते ।



पंचाक्षरी मंत्र का जाप नित करते रहते मुरुग
परमेश्वर का नाम हर पल अपने मन में लाते
परम पावन भक्ति से तन मन को भर पाते
परमेश्वर को अपना सबकुछ मान जीवन चलाते
मधुर मधुर स्वर अपनाकर भजन ये गाया करते
सुननेवाले भी स्वर सहित पूर्ण भक्ति अपनाते
मुरुग नायनार महान भक्त सदा करते ध्यान
भगवान को अपनाने का पूरा करते ये प्रयास ।



शिव भक्तों को खाना खिलाने स्थापित किये मठ
शिव भक्तों की सेवा करके भरते मन में ये सुख
शिव भक्ति के प्रभाव से बन गये ये भी प्रभावित
शिव भक्त महान तिरुज्ञान संबंधर के बने ये मित्र
साधु की संगति जीवन में सारी खुशियाँ लाती है
संत की मित्रता जीवन को हर तरह सफल बनाता है
मित्र के संग भक्ति करने निकले मुरुग नायनार
संबंधर संग चले गये भक्ति सागर में डूबते डूबते ये ।



तिरुज्ञानसंबंध नायनार का विवाह हुआ शिव कृपा से
तिरुज्ञानसंबंध के संग गये उसमें भाग लेने मृरुग
विवाह शिव का वरदान था उसमें भाग लेकर नायनार
शिव में मिल गये शिव की महाज्योति में मिल गये
भक्ति की शक्ति को जगत उसे दिखाकर अमर बने
भक्त मन से प्रभावित भोलेनाथ की कृपा भर पाये
शिव महान की महाकृपा से शिव में लीन हो पाये
शिवामृत का सेवन कर मृरुग नायनार अमर बन पाये ।

नमन मुरुग नायनार, भक्ति के भव्य सुमन ।
समन कर पूजा पाये, शिव के महान चरण ।।

नववर्ष का आगमन !!

– श्री. पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा',
नागपुर, महाराष्ट्र



घड़ी की सुइयाँ
चलती रहेगी
वो समय की रफ्तार
आगे बढ़ाती
रात बारह बजे
या दिन के बारह बजे
वो तो समय है
बस समय का पहिया
आगे बढ़ता रहता
जैसे दिनकर
की किरणें
प्रत्यूषा की लालिमा
वो नित
धरती को नव रूप देती
प्रकृति में छटा बिखेरती
वो क्या जाने
की नव वर्ष की ये छटा है
नदियाँ बहती रहती
समुंदर की लहरें
उठती और गिरती रहती
चाँद और तारे
समय की घड़ी
बन फर्ज
निभाते हैं
सौरमंडल की आभा
दमकती रहती
न हवा रुकती
बस हिंडोल कर
यहाँ से वहाँ
इठलाती बलखाती
बहती रहती
साँझ आती
गोधूलि बेला
संग लाती
निशा आती
जाते जाते
प्रत्यूषा लाती
सब चक्र चलते रहते
पात वहीं
कोयल का गीत वहीं
गोरैय्या का घोंसला वहीं
मुर्गे की बांग वहीं
समय थमता नहीं
भोर की किरणें
रूकती नही
सब कुछ चलता रहता
बस बदलता है
मानव का
कैलेण्डर
जहाँ तारीख, तिथि
सब होते
कुछ नहीं बदलता
बस बदल जाती
उम्र, वो चेहरे की
झुर्रियाँ
श्वेत केश
और बदल जाते
रिश्ते !!!



मासूमियत से ।

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

मासूमियत से जवाब देते हुए,
उम्मीद थी कि कुछ सुकून मिलेगा यहाँ ।
तक़दीर बदलने में,
कुछ हमदर्दी जताते हुए,
कुछ सुकून मिलेगा यहाँ ।

बेदर्द ज़माने से,
लड़ते-लड़ते थक गया था मैं यहाँ ।
उम्मीद जगा था कि,
कुछ लोग हम दर्दी जताते हुए,
मेरी मदद करेंगे यहाँ ।

मासूमियत से जवाब तलब किया तो,
कुछ लोग इसे खिदमत करने की,
तरीके मानने लगे ।
हम सफ़र बनकर तैयार रहने की जगह,
बड़ी सियासी ताकत दिखाने लगे ।

आज़ इस मासूम चेहरे पर,
जो यकीन था वह खत्म हो गया ।
एतबार छोड़कर चले गए,
सब कुछ खत्म हो गया ।

इस इल्म को हासिल करने में,
हमेशा वक्त लगता है ।
हमें आगे बढ़ने में इन्सानियत को बरकरार रखने का,
सही क़दम उठाने का,
जुनून नहीं दिखता है ।



नमन

– श्री. प्रतिभा प्रसाद 'कुमकुम',
जमशेदपुर, झारखन्ड

नमन वंदन तुम्हें करना ।
सदा तुम से जुड़े रहना ।।

यह प्रातः का नमन तुमको ।
प्रभु रघुवर नमन तुझको ।।

सृष्टि और चराचर को ।
फिर जगत में सबको ।।

कृपा गुरु देव करना ।
मेरे स्वार्थ को हरना ।।

बस आशीष देना तुम ।
सदा ही साथ रहना तुम ।।



सर्दी आई

– श्री. सूबेदार
कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

सर्दी आई, सर्दी आई, सर्दी आई,
गर्म कपड़े में बाहर जाओ भाई ।
स्वेटर, कोट और मफलर चाहिए,
रात में सोते समय ओढ़ो रजाई ।
सर्दी आई...

सुबह देर से सूरज निकलता है,
शाम को जल्दी दिन ढलता है ।
खांसी ज़ुकाम से लोग दुखी हैं,
नाम सुनकर कांपती है परछाई ।
सर्दी आई...

बार बार लोग गर्म चाय पीते हैं,
आग के सहारे ये जीवन जीते हैं ।
सर्दी का मौसम बहुत सताता है,
आग ही लड़ सकती इससे लड़ाई ।
सर्दी आई...

मेरे पापा सर्दी में पीते गर्म पानी,
बुजुर्गों को होती सर्दी से परेशानी ।
मेरी मम्मी सुबह शाम काढ़ा देती,
सर्दी की होती सबसे अच्छी दवाई ।
सर्दी आई...

जीवन्त-यश

– श्री. भाऊराव महंत, बालाघाट, म.प्र.



आकाश की
कठोर-चादर को
ओढ़ने के लिए
धरती की सी
नर्म-देह का होना
बहुत ही जरूरी है ।
क्योंकि
उसी आकाश की
कठोर-चादर में
पाई जाती है-
'उत्कर्ष की गर्मी' ।
और पाई जाती है-
'अपकर्ष की ठंड' ।
जिसने बचा पाई हो
उत्कर्ष की गर्मी को
उसे कभी-भी
नहीं लग सकती
अपकर्ष की ठंड ।
और तभी
बचा रह सकता है
देह रूपी सांचे में
आत्मा का उत्थान ।
और स्वयं के यश को संचित कर
रख सकता है हमेशा के लिए
- 'जीवन्त' ।



छब्बीस जनवरी

– श्री. गौरीशंकर
वैश्य विनम्र,
लखनऊ, उ.प्र.

छब्बीस जनवरी आयी है ।
गणतंत्र दिवस शुभ लायी है ।
जनगणमन के स्वर से गुंजित
भारत माँ की अँगनाई है ।
प्यारा है अपना संविधान
जनता ने सत्ता पायी है ।
सक्षम सशक्त जनतंत्र हुआ
जन–जन आपस में भाई है ।
सीमा पर सैनिक डटे हुए
नित राष्ट्र–वंदना गायी है ।
नभ में 'वंदेमातरम' गूँजे
धरती सहर्ष मुस्कायी है ।
गर्व से तिरंगा लहराता
बह रहा पवन सुखदायी है ।

सिंगार बढ़ाओ

– श्री. आर.एस. माथुर

दिन हर बार सजाओ
बंधन वार लगाओ
साँस बहुत सुंदर है
तुम सिंगार बढ़ाओ
महक उठेगा परिसर
एक कचनार उगाओ
गरदन पर रंगत है
सब के मन पर छाओ
सावन रूप भरेगा
उबटन और लगाओ
दंत मुक्त मय लगते
कजरा धार बढ़ाओ
अर्थ भरेगा पल पल
मुझको निकट बुलाओ
नदिया तट न काटे
जल को मंद बहाओ

வாணி விகாஸ் தேர்வு

ஏப்ரல்-2025 முதல் தேர்வு கட்டண விபரம்

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00



शब्द की गरिमा

– श्री. गोपेंद्र कु सिंहा गौतम,
औरंगाबाद, बिहार

लोकप्रियता जब दबदबा बन जाये,
अहंकार की बदबू नासिका छिद्र समाये ।
पहले आम जन दूर ठिठकने लगे,
उसके बाद धीरे–धीरे कन्नी काटे ।

*****

कहाँ, कब–क्या, किससे है बोलना,
बोलने से पहले बिल्कुल ना तौलना,
इतनी–सी बात जब भेजे में ना समाये,
फिर कहने को क्या बचा !

*****

जो आगत आदर ना देते,
जानेवाले को जोड़ते ना हस्त ।
औ नर जीत को पचा ना पाते,
फल पाके झुके ना दरख़्त,
फिर वही होखी जो प्रकृति रच राखा !

*****

जो चापलूस चौकड़ी से घिरकर,
व झूठी बड़ाई पीकर होते मस्त ।
और शब्द की गरिमा ना जाने,
उनके भाग्य का सितारा हो जाता अस्त,
इसलिए समझें भविष्य की भाखा !

*****

जहाँ बोलना है वहाँ नहीं बोलते,
जहाँ नहीं बोलना वहाँ बोल जाते हैं ।
निर्जला उपवास का स्वांग रचाते
पर देख हरियाली डोल जाते हैं ।
उनका भला कौन सखा !

*****

लोकप्रियता जब दबदबा बन जाये,
अहंकार की बदबू नासिका छिद्र समाये ।
पहले आमजन दूर ठिठकने लगे,
उसके बाद धीरे–धीरे कन्नी काटे ।

नवगीत

– श्री. राजेन्द्र परदेसी, लखनऊ, उ.प्र.

रहने की शेष नहीं
अब कोई चाह
सडको ने छीन ली
पगदंडी राह
पंचों के निर्णय
हो गये प्रपंच
स्वार्थ सिद्धि के
बन गये मंच
आगो में जल गयी
पेड़ों की छाँह
रिश्तों में
दिख रही दरार
पूरब की ओर का
गिर रहा कगार
गाँवों को लील रहे
शहरों के अजगरी प्रवाह





जिंदगी उधारी से चलती नहीं

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

दुआएँ इकट्ठा करो साहब,
साँसों का अता पता है नहीं,
कब आ जाए उसका बुलावा,
ख़बर ये किसी को भी नहीं ।

सचेत हो तुम कर्मों को करो,
इस जिंदगी की गारंटी नहीं,
चौरासी लाख योनियों में से,
मनुष्य ही बनो यह ज़रूरी नहीं ।

ईश्वर सबका हिसाब है रखता,
करो तुम ज्यादा चालकी नहीं,
फिर पश्चाताप का प्रयास करो,
पर शायद हो उसे मंजूर नहीं ।

प्रार्थनाएँ तो करते हो बहुत,
पर वह फलीभूत होती नहीं,
माया से घिरे चितमन से परे,
भक्ति कभी स्वीकार होती नहीं ।

दिखावे से बाहर तुम निकलो
जिंदगी उधारी से चलती नहीं,
आनंद आत्म सुख भाव भरो,
दोबारा यह बंदगी मिलती नहीं ।

दर्द कौन बांटे

– श्री. राजेन्द्र परदेसी, लखनऊ, उ.प्र.

पाँव में
चुभे हैं काँटे
दर्द
कौन बाँटे
घर में लड़ाई
होगी
किसकी भलाई
रिश्तों में
पैबंद
कौन साटे
भावनाओं को
लग गए
चाँटे
दूसरों का अहित
जिनको कबूल
वे लगाए
मेड पर बबूल
खायी
कौन पाटे
दर्द
कौन बाँटे

हम सब हिन्दी के उत्थान का काम करेंगे ।

बुलबुले और बुलबुलें

– श्री. केशव शरण, वाराणसी, उ.प्र.

मैंने
एक पहाड़ पर
एक जंगल के बीच देखा
एक जगह
फूट रहे हैं
पानी के बुलबुले

एक आदिवासी ने बताया
यह प्रकृति की व्यवस्था है
पेड़ों की बुलबुलों के लिए

और मैं
अपने नगर के बारे में सोचने लगा
जहाँ पिंजरों में बंद हैं बुलबुलें
और व्यवस्था से बाहर है

प्रकृति

दिशाएँ

दिशाएँ चार हैं
सिर्फ़ एक दिशा में
दृष्टि रही देख
थोड़े-से पेड़
बाक़ी तीन दिशाएँ
कंक्रीटी ढाँचों से
पूर्णतया ढँकी हैं
जिनके पीछे
मोर नाचता भी हो तो क्या !





अब कहाँ ?

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

हरियाली थी हर कहीं
वह खूबसूरती है अब कहाँ ?
पक्षी गाती थी हर जहाँ
अब बताओ पक्षी है कहाँ ?

इंटरनेट और उद्योग पर डूबी है दुनिया
प्रदूषण से भर पडी है अब यह दुनिया
कोई अब प्रकृति के बारे में सोचता नहीं
उसके बारे में परवाह करना किसी में नहीं ।

पवित्र थी धरती यह हमारी
सुचित्रा थी यह धरती हमारी
अब इसका क्या हाल रहा ?
अब बता इसका क्या हाल रहा ?

अब समय है इसे बदलने का
अब समय है धरती बचाने का
अब लगाओ पेड हर जगह तुम
अब बनाओ प्रकृति को पवित्रा ।



पतंग की पुकार

– श्री. नवीन कुमार जोशी,
जयपुर, राजस्थान

नील गगन में, होकर मगन,
मैं पेच पे पेच लड़ाती गई ।
सात्विक प्रेम में प्रेमी के संग,
स्वतंत्र हूँ मैं, संदेश सुनाती गई ।

स्वतंत्र हूँ मैं, संदेश सुनाती गई,
अपना हर हाल बताती गई ।
स्वदेशी प्रेमी डोरे के संग,
खुशहाली से पल बिताती गई ।

लेकिन अब आधुनिक जन से
तिल-तिल कर तड़पाती गई ।
विदेशी प्रेमी के बांध गले,
मैं हर जीव के गले कटाती गई ।

मैं हर जीव के गले कटाती गई,
घावों पर घाव बढ़ाती गई ।
बेजुबान पक्षियों को भी सुबह-शाम,
अपने ही घर मरवाती गई ।

मेरी पुकार है आधुनिक जन से,
मुझसे अत्याचार ना करवाओं ।
स्वदेशी प्रेमी के बांध गले,
मुझे नील गगन में पहुँचा दो ।

नील गगन में, मैं खुश रहूँगी,
प्रेमी संग मस्त मगन रहूँगी ।
चहुँओर यह संदेश देकर,
हर वर्ष ही मैं, आती-जाती गई ।

नील गगन में, होकर मगन,
मैं पेच पे पेच लड़ाती गई ।



जाल

– श्री. देवेन्द्र पाल सिंह 'बर्गली',
उधमसिंह नगर,
उत्तराखण्ड

जाल सिर्फ मकड़ियाँ
ही नहीं बुनती
कुछ लोग भी बुनते हैं
शब्दों का मकड़जाल
आनन्दित होते हैं
अपनी कृति की
सफलता पर
दृष्टा बन जाते हैं
सृष्टा भाव से
और भूल जाते हैं
हम सभी एक नटवर
के महाजाल की
परिधि के अन्दर हैं ।



खूबसूरत दिल

– श्री. के.वी. शर्मा, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश

शीतल चंद्रमा की छत्रछाया में
टिमटिमाती रोशनियाँ तारे हैं
हरे जंगल में
फ्रेग्रेन्स
मनुसेक्कडो... नहीं...,
मेरा...मानसेक्का... नहीं...,
बहती हवाओं में
वेनेलाडी जिसने मुझे लूट लिया...
कहीं... कहीं तुम...,
प्रिय हृदय... !

अंधेरी रोशनी में नीरूप...के लिए...
बार-बार नाखून ढूँढते हैं
एंडे सव्वडिला अलापना
मेरा... दिल तुम्हारे लिए है
के लिये तरस रहा हूँ
शीतल छत्रछाया में...,
मनसेक्का...करो...,
मेरा... मनसेक्कडो...,
वेनेलाडी जिसने मुझे लूट लिया
कहीं... आप... करें...,
मेरा... खूबसूरत दिल... !!

शीतल चंद्रमा की छत्रछाया में
खामोश रात...
हरे जंगल में
रंगीन
फूलों की सुगंध
एक अनुत्तरित कॉल
उसने एकतरफ़ा नज़र डाली
आपका इंतजार...
मेरा...हम सबका...तुम्हारा है
वो चाँद जिसने मुझे लूट लिया
कहीं...तुम्हारी कहीं
मेरा...खूबसूरत दिल...!!!

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।

पूर्णिका

– श्री. प्रदत्त सुधि

जो मिला बस वो, बेकरार मिला ।।
आप का प्यार, यादगार मिला ।।

आखिरी बार कह, खुदा अपना ।
कुछ यतीमों को, रोजगार मिला ।।

क्यों मुहब्बत की है, तलब इतनी ।
आप सा आज ही, तो यार मिला ।।

अब तो सबसे सवाल, करना है ।
आज फ़िर से कोई, विचार मिला ।।

कौन आता यहाँ, झुकाए सर ।
इस तरह से न, होशियार मिला ।।

दाँव उलटा ही पड़, गया लगता ।
पहने वो भी गले में, हार मिला ।।

अब तसल्ली हुई, हमें आखिर ।
फ़िर हमें आपका ही, प्यार मिला ।।

राम मंदिर सजा, दिया फिर है ।
बन्दगी को नया, दयार मिला ।।

यां भटकते रहे, 'कदम' यूँ ही ।
गाँव में अपने आ, करार मिला ।।



उसकी यादें

– श्री. शुभम पांडेय 'गगन',
अयोध्या, उ.प्र.

उसकी यादें उसकी बातें
तन्हा दिन है तन्हा रातें ।

कितना रोएँ कितना तड़पे
आयें बस याद मुलाकातें ।

अच्छा छोड़ो बात पुरानी
क्या रोती है तेरी आँखें ।

मैं भूलूँ कैसे उसको अब
वो है जैसे पाक अयातें ।

सब कहते कि सुनाओ गज़ले
मैं तो सुनाता तेरी बातें ।

अब भी नाराज़ गगन वो है
ऐसे चलते रिश्ते नातें ।

शिव शिव हर हर
कहा करो
पाप करने से तुम
सदा डरा करो ।



इनमें लिखे गए लेख को पढ़ने से ऐसा लगता है की अब महात्मा गाँधीजी का सपना साकार हो जाएगा । गाँधीजी ने आजादी पूर्व हिन्दी को राष्ट्र के उत्थान में एक मजबूत इच्छा शक्ति पैदा करने पर बल दिया था । शबरी मैगजीन उत्कृष्ट कार्य कर हिन्दी का दीप जलाने का कार्य कर रही है । जय हिन्द ।

– डॉ. बिहारी झा, जालंधर, पंजाब

सब कुछ अभी ही पढ़ लिया है । आपकी पत्रिका के लेखक बंधु बहुत ही प्रभावशाली लेखन के धनी हैं ।

– श्री. राजू तोमर, गाजियाबाद, उ.प्र.

आपकी शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका बहुत ही यथार्थ और आधुनिक शिक्षा के नए आयाम को शब्दबद्ध कर सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करनेवाली पत्रिका है...आपका हार्दिक अभिनंदन

– डॉ. जितेंद्र पीतांबर पाटिल,
संगमनेर, महाराष्ट्र

बहुत सुंदर, चित्ताकर्षक, लुभावनी और साहित्य, भक्ति, समाज, व्यक्तित्व विकास सभी पक्षों को समेटे हुई शानदार पत्रिका देखने-पढ़ने को मिली । धन्यवाद ।

– श्री. अमित कुमार 'अमित'
जनपद-इटावा, उ.प्र.

प्रेरक एवं प्रभवोत्पादक परिणाम परक सकारात्मक प्रयास ।।

– श्री. नन्द लाल मणि त्रिपाठी,
गोरखपुर, उ.प्र.

इस पत्रिका को आपने राष्ट्रीय स्तर का बना दिया है । इसमें देश के लगभग हर क्षेत्र के साहित्यकारों की रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । कुछ तो इसमें साहित्य के आदित्य पटल के साथियों की रचनाएँ प्रकाशित हैं ।

आप हिन्दी के लिए बहुत बड़ा काम कर रहे हैं । अहिन्दी क्षेत्र के लोगों की हिन्दी में रचनाएँ पढ़कर गर्व का अनुभव हो रहा है । हिन्दी अपने क्षेत्र विस्तार में सबको अपना रही है । आपके इस पुनीत कार्य को मैं नमन करता हूँ । आशा करता हूँ कि आप इसी जोश में पत्रिका को यूँ ही निकालते रहोगे ।

– श्री. लखन पाल लाल

सुंदर बौद्धिक विशेषांक के लिए आपको बधाई ।

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
धमतरी, छत्तीसगढ़

शबरी शिक्षा समाचार के 27 वर्षों से अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई और अनंत शुभकामनाएँ । माँ भारती और मातृभाषा हिन्दी की अनुकरणीय सेवा निरंतर जारी रहे यही कामना करता हूँ ।

– डॉ. अशोक अभिषेक,
कोडरमा, झारखंड

हिन्दी की मशाल जलाए हुए हैं तमिलनाडु में । शबरी का निरंतर प्रकाशन उनके संकल्प का फल है । शुभकामनाएँ ।

– श्री. बीएल आच्छा, चेन्नै, तमिलनाडु

सुंदर अंक के लिए हार्दिक बधाई । पत्रिका अच्छी लगी । देश के हर कोने से सामग्री शामिल है यह और भी सुखद है ।

– डॉ. अजय कुमार, छपरा, बिहार

आपकी पत्रिका शबरी ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया है । संपादकीय मंडल के इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

मैंने इस पत्रिका को कुछ अन्य साहित्य प्रेमियों के साथ भी साझा किया है, और उन्हें भी यह बहुत पसंद आई है । मुझे उम्मीद है कि आप इसी तरह के उत्कृष्ट कार्य को जारी रखेंगे । धन्यवाद ।

– श्री. अनिल पुरोहित, टोरंटो, केनडा

दक्षिण भारत के अहिन्दीभाषी क्षेत्र से प्रकाशित होनेवाली बहुभाषी पत्रिका शबरी शिक्षा समाचार का प्रकाशन निश्चित रूप से एक सराहनीय प्रयास है । दिसंबर 2024 के अंक में प्रकाशित संपादकीय में युवाओं से लेकर वृद्धों तक, सभी के लिए सकारात्मकता का संदेश दिया गया है, जो बहुत प्रासंगिक है ।

विशेष रूप से, डॉ. माणिक मृगेश जी का लेख भूमिफली, मूंगफली अत्यंत ज्ञानवर्धक लगा । पत्रिका में सम्मिलित अन्य सभी काव्य रचनाएँ और लेख भी ज्ञानवर्धक और मनोरंजक रहे ।

आपके इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं आपको बधाई देता हूँ ।

– डॉ. तेजिंद्र कैथल, हरियाणा

मैंने आपकी पत्रिका का नवीनतम अंक बहुत ध्यान से पढ़ा है । यह अंक अत्यंत उत्कृष्ट है । आपके और आपकी टीम के इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ ।

एक पत्रिका का प्रकाशन कितना मेहनत का काम होता है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ । आप सभी इस सफलता के पात्र हैं ।

आपके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ,

– श्री. प्रतिभा प्रसाद 'कुमकुम', जमशेदपुर, झारखन्ड

संपादक की कलम जीवन जीने के लिए है मानसिक तनाव सेउ भरने हेतु विचारणीय लेख

– श्री. भरतजी त्रिपाठी, टीकमगढ, म.प्र.

मैंने कई बार आपकी पत्रिका पढी है ! एवं मुझे काफी अच्छा लगा है ! मैं कभी-कभी कुछ कविता बना लेता हूँ और मेरी कविताएँ कुछ पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही हैं ! अहिन्दी भाषी क्षेत्र होने पर भी आप काफी लगन के साथ हिन्दी भाषा का प्रचार कर रहे हैं, जो काफी सराहनीय है ! मैं आशा करता हूँ कि आगे चलकर आपकी पत्रिका काफी मशहूर होगी !

– श्री. के.वी. शर्मा, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश

तमिलनाडु से आप हिन्दी की पत्रिका 'शबरी' निकाल रहे हैं, यह बहुत साहस का काम है । मैंने 'शबरी' के संलग्न दिसम्बर-2024 के अंक का अवलोकन किया पत्रिका आकर्षक है और सामग्री श्रेष्ठ है । एक अहिन्दीभाषी प्रान्त में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किया गया आपका कार्य निश्चय ही सराहनीय है । इसके लिए आपको बहुत

बहुत साधुवाद । आपके हिन्दी प्रचार-प्रसार के इस सारस्वत यज्ञ में आप उचित समझें तो मुझे भी आहुति देकर सहभागी बनने का सौभाग्य प्रदान कीजिएगा ।

– डॉ. नटवर नागर, मथुरा, उ.प्र.

आपके द्वारा सेलम तमिलनाडु से प्रकाशित शबरी शिक्षा समाचार साहित्यिक पत्रिका अपने आप मे अपार ज्ञान का भंडार समेटे हुये बहुत ही उत्कृष्ट कोटि की हिन्दी भाषी पत्रिका है । सभी रचनाएँ प्रबुद्ध वर्ग द्वारा लिखी गई हैं । अटल बिहारी पर आलेख एवं अनेक कविताएँ बहुत ही अच्छी हैं ।

आपकी पत्रिका के लिये मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ स्वीकार करें । सधन्यवाद । शुभाकांक्षी

– श्री. ऊषा सक्सेना, मुंबई, महाराष्ट्र

आपकी पत्रिका नियमित रूप से पढ़ने को मिल रही है, एतदर्थ आपका हृदय से बहुत-बहुत आभार ।

– डॉ. त्रिलोकी सिंह, प्रयागराज, उ.प्र.

अहिन्दी भाषी क्षेत्र में आप हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं । आपकी निष्ठा, लगन को प्रणाम करता हूँ । कविता, गीत, बालकविताओं के साथ आलेख ज्ञानवर्धक सामग्री भी देते हैं ।

– श्री. चक्रधर शुक्ल, कानपुर, उ.प्र.

दिलों में
प्यार भरो ।
सबसे प्यार करो ।

नवांकुर



एक कथा

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

यह कथा है जय और विजय की, जो नारायण के द्वारपाल थे । एक दिन जब ब्रह्म कुमार आए थे तब इन्होंने नारायण को देखने से मना किया था । इसीलिए ब्रह्मा कुमारों ने उनको शाप दिया की 'आप अपने भगवान से दूर हो जाओगे' । जब नारायण बाहर आए, उन्होंने पूछा कि वह सात जन्मों तक उनके भक्त बन कर रहना चाहते हैं या तीन जन्म राक्षस बनकर उनके हाथ से मुक्ति प्राप्त करें । जय-विजय ने तीन जन्मों के राक्षस शाप को स्वीकार किया ताकि वह शीघ्र वैकुंठ लौट सकें । पहले जन्म में दोनों ने हिरण्याक्ष, हिरण्यकश्यप नाम से जन्म लिया था । उनको वराह अवतार, नृसिंह अवतार द्वारा मारा गया था । दूसरे जन्म में रावण और कुंभकर्ण के रूप से जन्म लिया था और उनको राम अवतार के द्वारा मारा गया था । तीसरे अवतार में शिशुपाल और दांतवक्र के नाम से जन्म लिया था और कृष्ण अवतार के द्वारा मारा गए थे ।



एक यात्रा

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

हल्की हल्की हवा आई
रेल्वे स्टेशन पर एक रात
इतना अंधेरा और ठंडा
एक आदमी अंदर आया
एक और आकर बैठ गया
आदमी ने आदमी को देखा
धीरे धीरे वह पूछने लगा
आप तो कुछ नहीं पाते हैं
फिर कैसे आप हर जगह जाते हैं ?

मीठी आवाज में उत्तर पाया
ईश्वर ने मुझे रोशनी नहीं दी है
ऐसा नहीं है कि कुछ नहीं दिया है
आप जैसे अनेकानेक आ जाते हैं
मदद मेरी करने यहाँ वहाँ
बताइए कहीं जाने में तकलीफ कहाँ ?
अबलों का बल भगवान खुद है
वहीं आप जैसे लोगों को भेजते हैं ।

अंधेरा बाहर हर कहीं हो कुछ नहीं
दिल में अंधेरा जब भर जावें उससे दुखद नहीं
आत्मविश्वास से आगे बढते रहें तो
कौन रोक सकता ? कौन रूक भी जाता ?



नकारात्मकता छोड़ना

– शंकर वेंकटेश्वरन, श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक शेर था । उसे अपने शरीर से बुरी गंध आ रही थी । इसलिए उसने एक हिरण से जाकर पूछा, क्या मेरे शरीर से बुरी गंध आ रही है ? हिरण ने जवाब दिया, हाँ आपके शरीर से बहुत बुरी गंध आ रही है । गुस्से में शेर ने हिरण को मार दिया । फिर उस शेर ने वही सवाल को एक बंदर से पूछा । डरते हुए बंदर ने जवाब दिया नहीं । बंदर की झूठ सुनकर, शेर ने बंदर को भी मार दिया । आखिरी बार, वही सवाल को शेर ने एक लोमड़ी से पूछा । लोमड़ी ने जवाब दिया, माफ कीजिए, मेरी नाक बंद है, और मैं सूंघ नहीं पा रहा हूँ । कृपया किसी और से पूछिए । शेर ने उसे नहीं मारा और वहाँ से चुपचाप निकल गया । इस तरह, हमें भी जिंदगी में इस लोमड़ी जैसे बनना चाहिए । अनावश्यक बहस में न पड़ें, उन्हें नजरअंदाज करने का प्रयास करें, क्योंकि ज्यादातर मामलों में आप ही बलि का बकरा बन सकते हैं । नकारात्मकता को छोड़कर अपने जीवन का आनंद लेते रहें ।

देववाणी संस्कृत

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

आत्मार्पणस्तुतिः

पुरा तमिलनाडु राज्ये तिरुवण्णामलै जनपदे अडैयपलं नाम ग्रामे अप्पैय्य दीक्षितर् नाम एकः विद्वान् वसन्नासीत् । सः यज्ञकर्ता हिन्दुदर्शनस्य अद्वैतवेदान्तस्य व्याख्याकारः अभ्यासकश्च आसीत् । किन्तु तस्य दृष्टिकोणम् शिवस्य अथवा शिव अद्वैत विषये केन्द्रितः आसीत् ।

सः संस्कृतशिक्षणस्य प्रत्येकशाखासु सुपठितः आसीत्, यावन्तः लघु-बृहत्-कृतयः रचितवान् । तेषु तु 60 एव अधुना विद्यमानाः सन्ति । तेषु वेदान्तः, शिवद्वैतः, मीमांसा, व्याकरणः, काव्यव्याख्यानः, अलङ्कारः, भक्तिकाव्यः इति ग्रन्थाः सन्ति ।

दीक्षितरः अनेकानि तीर्थयात्राम् कृतवान् । अनेकेषु शिक्षणकेन्द्रेषु दार्शनिकविवादेषु च भागं ग्रहीतयति स्म । स्वजीवनकाले तेन वेल्लोर-तञ्जावूर-विजयनगर-वेङ्कटगिरि-राजैः पूज्यः, आश्रयः च प्राप्तः इति दुर्लभं सौभाग्यं प्राप्तम् ।

एकदा सः शङ्कितवान् 'किं अहं सत्यमेव ईश्वरभक्तः अस्मि' इति । तस्मात् तत् ज्ञातुं आत्मपरीक्षणं कर्तुं इच्छितवान् ।

'यदि उन्मत्तो भूत्वापि अनुचितं वचनं अकथयन् ईश्वरस्य विषये वदिष्यामि चेत् मम भक्तिः अकलङ्का इति ज्ञातुं शक्नुमः' इति तेन चिन्तितम् ।

सः शिष्यान् आहूय 'अहं इदानीं उन्मत्तः भविष्यामि । तदवसरे अहं यत् वदामि स्म तत् सर्वं लिखितव्यम्' इति तान् उक्तवान् । ततः उन्मादस्य शुद्ध्यर्थं कः औषधः दातव्यः इति अपि सः अवदत्त् ।

तदा सः उन्मत्तं भवितुं उक्तमौषधं गृहीतवान् । तत्क्षणमेव उन्मत्तोभूत्वा जल्पितुम् आरब्धवान् । तस्य सर्वं जल्पनं लिखित्वा प्रत्यौषधमपि दत्तवन्तः शिष्याः । तस्य उन्मादः च स्वच्छः अभवत् ।

सः शिष्यैः यत् लिखितं तत् दृष्टवान् । उन्मादावस्थायां अपि ईश्वरस्य विषये पञ्चाशत् श्लोकान् तेन रचितान् । तत् पुस्तकस्य नाम आत्मार्पणस्तुति इति । अयं ग्रन्थः उन्मत्तपञ्चाशत् इति नाम्ना अपि जनप्रसिद्धः अस्ति ।



अनधिकार चेष्टा कदापि श्रेयस्करं न भवति

– श्री. मोती प्रसाद साहू, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

एकस्मिन् ग्रामे एका प्रौढ़ा निवसति स्म । तस्या : कोऽपि रक्तसम्बधिन: नासीत् । विचारशीला सा उचितानुचितयो: भेदे निष्णाता, व्यवहारे प्रगल्भा, प्रकृत्या धार्मिका: चासीत् । सामाजिककार्येषु, परामर्शेषु अग्रे-अग्रे चलति । ग्रामवासिन: तां सम्मानेन 'पितृस्वसा' इति संज्ञया सम्बोधयन्ति । स्त्रीय: स्वपतिनां अपेक्षया तया सह आपणं गन्तुं सुकर: मन्यन्ते । तासां मनसि धारणा आसीत् यत् पितृस्वसया सह कोऽपि आपणिक:, वञ्चक: च वञ्चने समर्थ: न भविष्यति ।

पितृस्वसा भूमिहीना आसीत् । आजीविकायै एका धेनु: तया पालिता । धेनो: दुग्धं विक्रीय प्राप्तै: पणकै: गृहादिसामग्री खाद्यपदार्थानि च क्रयति । ग्रामीणा: धेनो: गोमयं उर्वरकाय स्वक्षेत्रं नयन्ति विनिमये तृणानि पराल्यादय: ददति स्म ।

एकदा विथिकायां इतस्तत: परिभ्रमन् एका शिशुविडाली दुग्धरोटिकादि प्रदानेन तया सहैव निवासं आरब्धवती । स्वामिनी यदा गृहाभ्यान्तरे कार्ये संलग्ना जाता बहुधा विडाली आसंदिकायां, विश्रामकाले स्वामिन्या : क्रोड़े च उपविशति स्म । गृहात् बहि: तस्या: अग्रे-अग्रे सुरक्षाप्रहरीव चलति ।

काचिद् समयान्तराले पितृस्वसा नवजात् किंतु अध्वरे स्थापिता परित्यक्ता एकां कन्यकां प्रति दयालु : भूत्वा पालनार्थं गृहम् आनीतवती । पितृस्वसा तां कन्यकां दुहिता इव स्नेहं करोति स्म । मल-मूत्रं प्रक्षालयति, अंके निधाय गोदुग्धं पाययति, स्नापयति, सज्जीकरोति च ।

पूर्वे तस्या: गृहे तया सह केवलं विडाली एव आसीत् । सा एव पितृस्वसाया: प्रेमभाजनं भवति ।

अनेन क्रमेण एकदा पितृस्वसा शीते सूर्यातपे उपविश्य तां कन्यकां दुग्धं पाययति स्म । विडाली तयो: सम्मुखं काचिदन्तराले उपविश्य ध्यानेन एतत् सर्वं पश्यति स्म । मनसि अचिन्तयत् यदि इयं बालिका न भवति तत् सम्प्रति स्वामिन्या: अंके अहमेव आसम् ।

पितृस्वसया विडालिकाया: मन्तव्यं शीघ्रं पठितम् । एतस्यां मनसि दुर्भावना प्रविष्टा । गृहे अस्या: उपस्थिति: शुभावहा न इति अमन्यत् । समीपस्था एकां सम्मर्जनीं उत्थाय तस्या: उपरि क्रोधेन अक्षिपत् ।

विडाली स्वं प्रति स्वामिन्या: एतादृशं क्रोधं एतत् पूर्वं कदापि न पश्यति स्म । सा गृहात् शीघ्रातिशीघ्र पलायने एव स्व कल्याणं अमन्यत् । अनधिकार चेष्टा कदापि श्रेयस्करं न भवति ।

தமிழழுது – துன்பத்திற்கு இடம் கொடேல்

– **எம். ஸ்ரீதர்,** நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

மனித வாழ்க்கை இன்பமும் துன்பமும் நிறைந்தது. ஆசையே துன்பத்தின் முதல் காரணம். ஆசையில்லாத மனிதன் மிகுந்த துன்பத்தை வாழ்க்கையில் பெறுவதே இல்லை. ஒவ்வொரு மனிதனும் தனக்கான தேவைகளைத் தேடிக் கொள்வது இயல்புதான். ஆசை பேராசையாகும் போது அளவில்லா துன்பத்திற்கு ஆளாக வேண்டி இருக்கிறது. துன்பம் என்ன செய்யும் இன்பம் என்ன செய்யும் என பகுத்தறிந்து பார்த்தால் அளவுக்கு மிஞ்சிய இன்பமும் மனிதனை மனநிலை சரியில்லாதவனாக மாற்றிவிடும். பேரானந்தம் அல்லது பரமானந்தம் என்பது பக்தியை அடிப்படையாகக் கொண்டது என்று பலர் கூறினாலும் சிலர் தன்னுடைய தேவைகளை சுருக்கிக் கொண்டு இருப்பதில் பேரானந்தம் கொள்ளும் போது வாழ்க்கை மிக அழகாகவே மாறிவிடுகிறது.

இன்பம் முகத்தில் புன்னகையை கொண்டு வருகிறது. புன்னகை வாழ்வில் பேரழகை கொண்டு வருகிறது. மகிழ்ச்சி மனதில் இலகுவாக்குகிறது. மகிழ்ச்சியினால் வாழ்க்கை வசந்த காலமாக தோன்றுகிறது. முகத்தில் புன்னகை தன்னை மட்டுமல்லாது தன்னை காண்பவரையும் மகிழ்ச்சி கொள்ள செய்கிறது.

சரி துன்பம் என்ன செய்யும் ? துன்பம் தான் எல்லாமே செய்யும். துன்பப்பட்டு ஏதாவது பலன் இருக்கிறதா என்று ஆராய்ந்து பார்த்தால் துன்பத்தினால் எந்த நன்மையும் நடக்கப் போவதில்லை. துன்பம் ஆற்றலோடு, அறிவையும் முடக்கி விடுவதால் மனிதன் முடங்கிப் போகிறான். கவலை மனதில் குடிகொள்ளும் போது மனிதன் கலங்கி நிற்கத் தொடங்குகிறான். அவனுடைய கவலையானது அவனுடைய நேரத்தையும் ஆற்றலையும் அறிவையும் முடக்கி விடுவதோடு மனிதனை ஒரு மூலையில் முடங்க செய்து விடுகிறது. மனச்சோர்வு உடல் சோர்வை கொண்டு வருவதுடன் ஒவ்வொரு உறுப்புகளாக அதன் பாதிப்பு மெல்ல மெல்ல விரிவடைந்து மனிதனை மொத்தமாகவே அது அசைவற்ற பொருளாக ஆக்கிவிடுகிறது.

இவை அனைத்தையும் மனதில் கொண்டே நமது ஔவைப்பாட்டி அவர்கள் **துன்பத்திற்கு இடம் கொடேல்** என்று கூறுகிறார். துன்பத்திற்கு இடம் கொடுத்தால் துவண்டு போவோம். துன்பத்தைக் கண்டு அஞ்சாமல் துன்பத்தை போக்கும் வழிகளை கண்டு கொண்டால் மகிழ்ச்சியுடன் பல காலம் வாழ்வோம்.

தொடரும்...



அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருத்தலைச்சங்காடு

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு



சீர்கொண்ட பாடலீர்
செங்கண்வெள்ளே லூர்தியீர்
நீர்க்கொண்டும் பூக்கொண்டும்
நீங்காத்தொண்டர் நின்றேத்தத்
தார்கொண்ட நூல்மள்பர்
தக்கோர்வாழும் தலைச்சங்கை
ஏர்கொண்ட கோயிலே
கோயிலாக இருந்தீயே
- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் அருளிய
இரண்டாம் திருமுறை

தலையுடையார், கோயில்பத்து, தலைச்சங்கானகம், சங்குவனம், சங்காரண்யம் எனப் பலப்பல திருநாமங்களால் சிறப்பிக்கப்படும் அருட்தலம் திருத்தலைச்சங்காடு ஆகும்.

இத்தலம் பஞ்சாரண்ய க்ஷேத்ரங்களில் சங்காரண்யமும் (தலைச்சங்காடு) ஒன்றாகும். மற்ற நான்கு தலங்கள் ஸ்வேதாரண்யம் (திருவெண்காடு), வேதாரண்யம் (திருமறைக்காடு), வில்வாரண்யம் (திருச்சாய்க்காடு), வடவாரண்யம் (திருவாலங்காடு) ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

அல்லோரிடம் இருந்து நல்லோரைக் காக்க ஸ்ரீமந் நாராயணன் இத்தலத்து ஈசனை வணங்கி சங்கினைப் பெற்றார். இதன் காரணமாக இத்தலத்து ஈசன் சங்காரண்யேஷ்வரர் என்று அழைக்கப்படுகின்றார்.

சங்கின் தோற்றம் :

ஸ்ரீ கிருஷ்ணரின் மகனான சுதர்மன் ராதையின் சாபம்

காரணமாக சங்கசூடன் என்ற அசுரனாகப் பிறந்தான். இவன் தாம் பெற்ற வரத்தின் பலத்தால் தேவர்களுக்கு சொல்லொனாத் துன்பம் கொடுத்தான். இதனால் வருந்திய தேவர்கள் தங்களைக் காக்கும்படி சிவபெருமானிடம் வேண்டினர். ஸ்ரீ சிவ பெருமானும் தமது சூலாயுதத்தால் சங்கசூடனை அழித்துச் சாம்பலாக்கினார். அவனது எலும்புகள் கடலில் விழுந்தன, அவையே சங்குகாலம் மாறியதாகக் கூறப்படுகின்றது.

பாஞ்சஜன்யம் :

பாஞ்சன் என்ற அசுரன் சங்கசூடன் காரணமாக உருவான சங்குகள் தம் இனத்தவர்க்கே சொந்தம் என்றான். இதனால் மஹாவிஷ்ணு அவனிடம் போரிட்டு அவனை வென்றார். இதன் காரணமாக ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு கையில் உள்ள சங்கிற்கு பாஞ்சஜன்யம் என்ற திருநாமம் வந்ததாகவும் அறியப்படுகிறது.

பெயர்க்காரணம் :

திருமாலின் வேண்டுகோளுக்கு இணங்கு அவருக்குச் சிவபெருமான் சங்கினை வழங்கிய காரணத்தாலும், இப்பகுதியில் சங்குப்பூக்கள் அதிக அளவில் பூத்திருந்ததினாலும், பூம்புகார் கடற்பகுதியில் கிடைத்த சங்குகள் விற்பனை செய்யும் மையமாக இவ்விடம் திகழ்ந்ததாலும், இத்தலத்திற்கு சங்காரண்யம் என்ற திருநாமம் உண்டானதாகத் தலவரலாறு கூறுகின்றது.

சிறப்புக்கள் :

1. திருத்தலைச்சங்காடு திருத்தலம் பற்றிய குறிப்பு சிலப்பதிகாரத்தில் காணப்படுவதில் இருந்து இத்தலத்தின் தொன்மையும் மேன்மையும் விளங்கும்.
2. இந்தத் தலமும் கோஞ்செங்கட்சோழன் கட்டிய மாடக்கோயில்களில் ஒன்று ஆகும்.
3. வலம்புரி சங்கு அமைப்பிலும், சோமஸசுந்தர் வடிவிலும் அதாவது திருக்கோயிலில் நுழைந்தவுடன் இடப்புறம் சிவபெருமான், நடுவில் முருகர், வலப்புறம் அம்பிகையும் அருள்வது சிறப்பு.
4. பிள்ளைப்பேறு தள்ளிப்போகும் பெண்கள் பௌர்ணமி நாளில் விரதம் இருந்து அம்பிகைக்கு அலங்காரம் செய்த

சந்தனத்தை சிறிகு உட்கொண்டால் அவர்களுக்கு விரைவிலேயே குழந்தைச்செல்வம் கிடைப்பது அனுபவம்.

5. ஒரே தலத்தில் மும்மூர்த்திக்கும் தரிசனம் தருகின்றனர்.
6. ப்ரதோஷ நாயகர்-நாயகி வடிவம் கற்சிலையாக அருள்வது இந்த ஒரு தலத்தில் மட்டுமே.
7. பொதுவாகச் சிவாலயங்களில் தெற்கு முகமாகத் திருக்காட்சி தரும் ஸ்ரீ நடராஜப் பெருமான் இந்தத் தலத்தில் கிழக்கு முகமாகக் காட்சி தருகிறார்.
8. ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணுவிற்குத் தனிச்சந்நிதி உள்ளது.
9. சங்கநிதி, பதுமநிதி சந்நிதிகளும் உள்ளன.
10. மூலவர் லிங்கத்திற்கு நல்லெண்ணெய் அபிஷேகம் செய்து, அதன் முன் தீபம் காண்பித்தால் லிங்கத் திருமேனியில் மயிர்க்கால்கள் இருப்பதுபோன்று தெரிகின்றது.
11. பௌர்ணமியன்று இத்திருக்கோயில் சங்கு தீர்த்தத்தில் நீராடுவது சிறப்பு.
12. இந்தத்தலத்தில் 10 சோழர்கால கல்வெட்டுகள் உள்ளன.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன் : ஸ்ரீ சங்காரண்யேஷ்வரர் (எ)
ஸ்ரீ சங்கவனேஷ்வரர்
இறைவி : ஸ்ரீ சௌந்தரநாயகி
தீர்த்தம் : சங்கு தீர்த்தம்
தலமரம் : புரசு
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர் : ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞான சம்பந்தரும், ஸ்ரீ நாவுக்கரசரும் இத்தலத்து ஈசனுக்குப் பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளனர்.

தரிசன காலம் :

காலை 06.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 05.00 மணி - இரவு 07.00 மணி வரை

திருக்கோயில் முகவரி :

ஸ்ரீ சங்காரண்யேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
தலைச்சங்காடு - 609 301.
ஆக்கூர் (Po), தரங்கம்பாடி (Tk),
நாகப்பட்டிணம் (Dt).



அமைவிடம் :

சீர்காழி- திருக்கடையூர் சாலையில் சீர்காழியில் இருந்து சுமார் 16 கி.மீ. தொலைவில் திருத்தலைச்சங்காடு திருத்தலம் அமைந்துள்ளது. மயிலாடுதுறையில் இருந்து ஆக்கூர்முக்கூட்டு வழியாகவும் சுமார் 21 கி.மீ. பயணித்து இத்தலத்தை அடையலாம்.

திருக்கடையூரில் இருந்தும் இத்தலம் வரலாம்.

108 திவ்யதேசங்களில் ஒன்றான ஸ்ரீ நான்மதியப் பெருமாள் திருக்கோயிலும் இத்திருத்தலத்தில் உள்ளது சிறப்பு.

ஸ்ரீ சௌந்தர நாயிகா ஸமேத
ஸ்ரீ சங்காரண்யேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- அல்லது ஆயுள் சந்தா (20 வருடம்) ₹1000/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

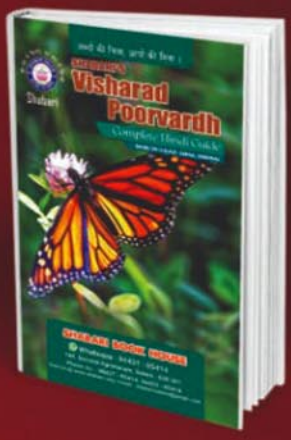
Sd.

Date : 05.01.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

VISHARAD POORVARDH

Just ₹330/- Only



Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

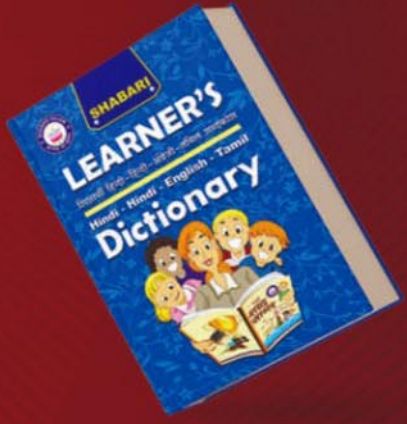
LEARNER'S DICTIONARY

1024 Pages

Just ₹420.00 Only

35,000 Words

Hindi - Hindi - English - Tamil



மூன்று மொழிகளின் முத்தான வார்த்தைகள்
முன்னேற்றம் தந்திடும் முத்தான வார்த்தைகள்
மூன்று மொழிகளில் புலமை வாய்ந்திட
முதல் வேலையாய் சபரியை வாங்கிடு
கற்போர்க்கு இது கலங்கரை விளக்கம்
கலைச்சொற்கள் மும்மொழியில் அடக்கம்
கற்போர்க்கு இது மிகவும் நன்று
கற்பிப்போர்க்கும் இதனால் பயன் உண்டு.
தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க மிகவும் நன்று !!

Posted at Salem HPO 636 001. January - 2025

Published on 5th January - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To _____

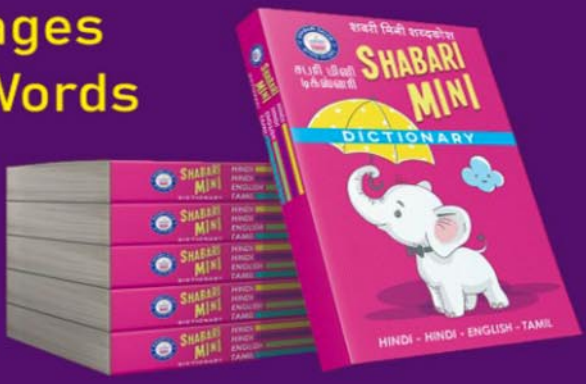
DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Shabari Mini Dictionary

Easy to use .. user friendly
Essential words in Hindi - Hindi - English - Tamil
Useful words with better explanation in Hindi, English and Tamil
Two Colours to make reading interesting
Prepared by the scholars
10,000 words worthy to learn
Perfect gift for all you love.

₹ 120 /- Only
Pocket Dictionary

572 Pages
10,000 Words



SHABARI BOOK HOUSE
'Shabari Palace', 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
WhatsApp : 94431-65414
Landline Phone : 94433-65414, 98427-65414
visit us @ www.shabari.org